ISSN : 2320-0391

सृजन

ಸೃಜನ

हिन्दी-कन्नड साहित्य और संस्कृति

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

जुलै-सितंबर २०१६

त्रैमासिक पत्रिका

Scanned by CamScanner

RNI Regd. No. KARBIL/2014/54464 Postal Regd. No/ PMG/KA/NK/BJP/60/2017-19

ಸಾಮಾನ್ಯರ ಜಗತ್ತು

ನಾವೆಲ್ಲರೂ ಸಾಮಾನ್ಯರಿದ್ದೇವೆ
ಮನದಿಂದ, ಮೆದುಳಿನಿಂದಲೂ
ಭಾವನೆಯಿಂದ, ಪ್ರಜ್ಞೆಯಿಂದಲೂ
ಬುದ್ಧಿಯಿಂದ ವಿವೇಕದಿಂದಲೂ
ಯಾಕೆಂದರೆ ನಾವು ಜನರಿದ್ದೇವೆ
ಸಾಮಾನ್ಯರಾಗಿದ್ದೇವೆ
ವಿಶಿಷ್ಟತೆ ಇಲ್ಲ
ಯಾಕೆಂದರೆ ಜಗವೆಲ್ಲ
ಬೇಡುತಿದೆ ಸಾಮಾನ್ಯರೆ ಇರಲಿ
ಇಲ್ಲವಾದರೆ ಸಿಗುವರೆ–
ಭಾಷಣಕಾರರಿಗೆ ಕೇಳುಗ
ನಾಯಕರಿಗೆ ಹಿಂಬಾಲಕ
ಬುದ್ಧಿವಂತರಿಗೆ ಓದುಗ
ಆಂದೋಲನಗಳಿಗೆ ಜನಜಗುಂಳಿ
ಧರ್ಮಗಳಿಗೆ ಭಕ್ತ
ಜಾತಿವಾದಿಗಳಿಗೆ ಬುದ್ಧಿಮಂದ
ರಾಜ್ಯಗಳಿಗೆ ಗುಮಾಸ್ತ
ಕಾರಖಾನೆಗಳಿಗೆ ಶ್ರಮಿಕ
ತೋಪುಗಳಿಗೆ ಆಹಾರ
ಪಾರ್ಟಿ–ಬ್ರಾಸ್‌ಗಳಿದಗೆ ಜೀ ಹುಜುರ್
ರಾಜರಿಗೆ ಗುಲಾಮ
ಆಳುವವರಿಗೆ ಅಂಧ
ಪ್ರಜಾ ಪ್ರಭುತ್ವಕ್ಕೆ ಸಾದಾರಣ ಜನ
ವಿಚಾರವಾದಿಗಳಿಗೆ ಮೂರ್ಖರುಸೈನ್ಯವಾದಿಗಳಿಗೆ
ಅಚ್ಚಿನ ಮನುಷ್ಯ
ನಾವೆಲ್ಲರೂ ಇದಕ್ಕಾಗಿಯೇ
ಯುಗ–ಯುಗಗಳಿಂದ ಜೀವಿಸುತ್ತೇವೆ
ಗುಲಾಮರಾಗಿದ್ದೇವು ನಾವು
ಇತಿಹಾಸ ವಸ್ತ್ರ ಹೊಲಿಯುತ್ತೇವೆ
ಇತಿಹಾಸ ಅವರದ್ದಾಗಿದೆ
ನಾವೆಲ್ಲ ಶಾಹಿ
ವಿಜಯವೆಲ್ಲ ಅವರಿಗೆ
ನಾವು ಗಾಯಗೊಂಡ ಸೈನಿಕರು
ಯಾವಾಗಲೂ ನಾವು
ಗಾಯಗೊಂಡಿರಬೇಕು
ರಾಕ್ಷಸರ ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತಾ
ಸಾಮಾನ್ಯರಾಗಿಯೇ ಇರಬೇಕು.

– ಗಿರಿಜಾಕುಮಾರ ಮಾಥುರ
ಅವರ ಹಿಂದಿ ಕವಿತೆ ಕನ್ನಡಕ್ಕೆ ಅನುವಾದ

ISSN 2320-0391

सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज' महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने,
विजयपुर - 586103 (कर्नाटक)

ಸೌಮ್ಯ ಪ್ರಕಾಶನ
'ಕಬೀರ ಕುಂಜ' ಮಹಾಬಳೇಶ್ವರ ಕಾಲೋನಿ,
ದರ್ಗಾ ಜೇಲ ಮುಂದೆ,
ವಿಜಯಪುರ – ೫೮೬೧೦೩ (ಕರ್ನಾಟಕ)

Scanned by CamScanner

'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रित वृद्धावस्था की समस्याएँ

• डॉ एस. टी. मेरवाडे

भूमिका

वर्तमान संदर्भ में न केवल भारतीय समाज में अपितु वैश्विक स्तर पर वृद्धावस्था एक बड़ी भारी समस्या बनती जा रही है -स्वयं वृद्धों के लिए भी और शेष समाज के लिए भी। विश्व में बुजुर्गों का परम स्थान है, परंतु तेजी से बदलते पारिवारिक तथा सामाजिक परिवेश में उनका स्थान लगातार नीचे गिरता जा रहा है। विश्व भर में बढ़ रही घोर प्रतिस्पर्धा से नैतिक तथा पारिवारिक एकता के मूल्यों का पतन होता जा रहा है। बुजुर्गों पर इसका प्रभाव अधिक है। जीवन के अंतिम पड़ाव में वे बेटे और परिवार के सुख से वंचित हो रहे हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था के तेजी से बिखरने के कारण बुजुर्गों की देखभाल की समस्या और भी विकट रूप धारण करती चली जा रही है। वृद्धों की इस दुर्दशा पर हिंदी उपन्यास साहित्य में विपुल मात्रा में लिखा समाज के हाशिए पर पड़े वृद्ध समाज पर सिमोन द बुआ की पुस्तक 'ला विएल्लेसे' (ओल्ड एज-1977) वृधावस्था विमर्श की गीता मानी जाती है। उन्होंने वृद्धों की दुर्दशा पर गहन चिंतन व्यक्त किया है। हिंदी उपन्यास साहित्य में वृद्ध विमर्श को केंद्र में रखकर बीसवीं सदी के अंत में कृष्णा सोबती का 'समय सरगम' (2000) तथा ममता कालिया कृत 'दौड़' (2000), तथा निर्मल वर्मा का 'अंतिम अरण्य' (2000) ऐसे सशक्त उपन्यास थे, जिसमें समाज से कट रहे बुजुर्गों का दर्द दिखाई देता है। इक्कीसवीं सदी में भी वृद्धजनों को केंद्र में रखकर कई उपन्यासों का सृजन हुआ। जैसे कथाकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में उपेक्षित होते इस वर्ग के जीवन को परत-दर-परत उघाड़ने का प्रयास किया है।

'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रित वृद्धावस्था की समस्याएँ :

समकालीन महिला कथाकारों में चित्रा मुदगल का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण रहा है। उनके लेखन का आरंभ अस्सी के दशक से हुआ। उनका पहला उपन्यास 'एक जमीन अपनी' विज्ञापन जगत की चकाचौंध में नारी की स्थिति पर प्रकाश डालता है। उनका दूसरा उपन्यास 'आवां' नारी विमर्श का अदभुत आख्यान माना जाता है। सन 2002 में प्रकाशित उनका तीसरा उपन्यास 'गिलिगडु' विषय की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों से भिन्न है। श्रवण कुमार के इस देश में माता-पिता वृद्धावस्था में जिस त्रासद स्थिति को भोग रहे हैं, उसका बखूबी चित्रण इस उपन्यास का केन्द्रीय विषय है। इस उपन्यास के हो वृद्ध पात्र बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी के माध्यम से वृद्धावस्था की त्रासद स्थितियां इस रूप में उकेरी गई हैं कि लगता हैं ये दोनों पात्र बहुत-बहुत

Scanned by CamScanner

अपने और पहचाने हुए से हैं। महानगरीय पृष्ठभूमि पर लिखे गए इस उपन्यास में चित्रा जी ने जिस ज्वलंत समस्या को उठाया है वह सिर्फ महानगरों तक सीमित नहीं है बल्कि समाज के हर वर्ग में दिखाई देती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का नारा देने वाले भारतीय जीवन दर्शन में पिछले कुछ वर्षों पूर्व तक घर में बुजुर्गों का होना या उनकी देखभाल करना गर्व एवं सम्मान की बात समझी जाती थी। किंतु विदेशी सभ्यता एवं संस्कृति का आज के युवा वर्ग द्वारा धडल्ले से अन्धानुकरण के कारण ईश्वर तुल्य समझे जाने वाले माता-पिता को बच्चों की उपेक्षा झेलनी पड़ रही है। आजकल वृद्ध लोगों का घर में रहना अभिशाप या बंधन सा लगने लगा है। इसका सजीव चित्रण चित्रा मुदगल ने अपने उपन्यास 'गिलिगडु' में किया है।

परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा एवं प्रताडनाएं :

कानपुर में सेवानिवृत्ति के बाद इंजीनियर जसवंत सिंह अपनी पत्नी तथा मित्र के निधन से बिलकुल अकेले हो जाते हैं। इस अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए डाक्टर की सलाह मानकर वे दिल्ली में अपने बेटे नरेंद्र के पास रहने लगे। दिल्ली में आने के बाद बाबू जसवंत सिंह उनके लिए कोई स्वतंत्र कमरा नहीं मिलता। उनका सामान कमरे में तब्दील की गई बालकनी में रख दिया जाता है। जहाँ उन्हें उस घर के कुत्ते टॉमी के साथ रहना पड़ता है। बहू सुनयना के मन में अपने ससुर के प्रति कोई आत्मीयता नहीं, कुछ है तो लोभ है, जो मृत सास के गहनों और ससुर की संपत्ति हडपने की आकांक्षा है। बहू के उपेक्षित व्यवहार से उनका मोहभंग हो जाता है। उन्हें बहू की झिडकियां और ताने सुनने पड़ते हैं। सुनयना अपने पति-एवं बच्चों के लिए उनके पसंद का भोजन बनाती तो है, परंतु बाबू जसवंत के रूचि के अनुसार भोजन नहीं देती। पिज्जा, बर्गर, न्युडल्स, रशियन सलाद वगैरह उन्हें नहीं भाते, न हजम होते हैं। फ्रिज में रखा बासी खाना वे खा नहीं सकते। वे अपनी अनिच्छा अपने बेटे के सामने भी प्रकट नहीं कर सकते, क्योंकि वे अनिच्छा प्रकट करने की औकात नहीं रखते। इच्छा-अनिच्छा घरवालों की होती है। घर में आकर रहनेवालों की नहीं।[3] जब उनसे रहा न गया, तो वे अपने बेटे नरेंद्र से इस संबंध में कहते हैं, तो नरेंद्र ने एक लंबा-चौड़ा भाषण दे दिया और नसीहत दे देता है कि आइंदा वे अपनी पसंद की गुंजाइश इस घर में न ढूंढे तो बेहतर है।[4] घर में उनकी उपयोगिता सिर्फ टॉमी के लिए होती है। क्योंकि सुबह-शाम उसे अपने साथ घुमाने के लिए ले जाना पड़ता है।

शारीरिक विवशताएँ :

उम्र के साथ-साथ मनुष्य को शारीरिक विवशताओं से जूझना पड़ता है। बाबू जसवंत सिंह की याददाश्त कमजोर हो जाने के कारण कभी-कभी कमरे के बिजली का बटन बंद करना भूल जाते हैं, या कभी लिफ्ट खुली छोड़ देते हैं, तो बहू सुनयना उन्हें प्रताड़ित करने में चूकती नहीं। भूल जाएँगे तो बिजली का मीटर तो नहीं खामोश बैठ जाएगा । बुढ़ापे में मनुष्य कई रोगों का शिकार हो जाता है। बाबू जसवंत सिंह बवासीर जैसे रोग से पीड़ित हैं। खून रिसने के कारण उनके कपड़े खून से भर जाते हैं। अत: सुनयना उनके कपड़े नहीं धोती। बल्कि उन्हें अपने कपड़े खुद धोना पड़ता है। जिस बाबू जसवंत सिंह अवमानना की पीड़ा से आहत होते हैं। वृद्धावस्था की शारीरिक विवशताओं से बार-बार बेटा-बहू के सामने लज्जित होना पड़ता है, कभी पायजामे में पेशाब निकल जाने या पेशाब करते समय बाद में कुछ बूंदों के टपक जाने से। बेटे-बहू को उनकी डकार या पाद पर भी आपत्ति है, तो बाबू जसवंत सिंह अपने बेटे नरेंद्र से कहते हैं छींक, पाद, डकारें जवानी और बुढ़ापा नहीं देखती

Scanned by CamScanner

नरेंद्र! बवासीर के कारण बाबू जसवंत सिंह को मस्सों में हडिसा ट्यूब लगानी पडती है। एक बार कमरे की स्लाईडिंग खिडकियां खुली रह गई थी, बाबू जसवंत सिंह पायजामा खोल दिया और उनकी पड़ोसन मिसेज रावत की बेटी ने देख लिया। बाबू जसवंत सिंह पर आरोप लगाया गया कि मिसेज रावत की बेटी को देख पायजामा खोल दिया है। इस पर उनकी बहू सुनयना ने उन्हें प्रताड़ित करने में एक क्षण की भी देर नहीं की। वह अपने ससूर से कहती है, आखिर बाबूजी इस संभ्रांत सोसाइटी में उनकी इज्जत खाक में मिलाने पर क्यों उतारू हैं? अपनी उम्र का लिहाज किया होता। अभी भी जवानी का जोश बाकी हो तो दिक्कत कैसी? चले जाया करे रेडलाईट एरिया। कौन पेंशन कम मिलती है उन्हें जो उनकी मौजमस्ती में हाथ बंधे हो? कम से कम अडोस-पडोस की किशोरियों पर तो नजर न डालें। मुँह दिखाने लायक रखें उन्हें सोसायटी में ।

बच्चों द्वारा संपत्ति हड़पने की कोशिश :

कर्नल स्वामी के तीनों बेटों की गिद्ध दृष्टि उनके चार कमरों वाले नोएडा के फ्लैट पर है जबकि वे गाजियाबाद स्थित कीमती प्लाट बेचकर उनकी फ्लैट खरीदने में मदद कर चुके हैं। कर्नल स्वामी का मंझला पुत्र श्रीनारायण संपत्ति के लिए झगड़ा किया और क्रुद्ध होकर कर्नल स्वामी की खूब पिटाई की। लहुलुहान कर्नल को 'कैलाश अस्पताल' में भर्ती कराया गया। उन्होंने बेटे के विरुद्ध एफ.ई.आर दर्ज कराने से मना कर दिया। इसके माध्यम से लेखिका यह बतलाना चाहती है कि माता-पिता का हृदय ही है कि अपनी संतान की हर गलती को क्षमा करता है, कभी ममतावश तो कभी लोकलाजवश। इसके बाद कर्नल की मृत्यु हो जाती है। इस त्रासद मृत्यु पर मिसेज श्रीवास्तव का कथन है - ऐसी कसाई औलादों से तो आदमी निपूता भला। हमे इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं...।[1]

बच्चों द्वारा माँ-बाप को वृद्धाश्रम में भेजने का प्रयास :

बाबू जसवंत सिंह के बेटे-बहू की नजर उनके कानपुरवाले लाकर और घर पर पडती है, वे येन-केन प्रकारेण दोनों को हथियाना चाहते हैं। इसमें नरेंद्र अपनी बहन शालिनी को भी शामिल कर लेता है। आश्चर्य की बात यह है कि शालिनी भी अपने भाई का साथ देती है। बहन शालिनी भाई का साथ इस हद तक देने को तैयार है कि उन्हें वृद्धाश्रम में भेज देने का प्रस्ताव पिता से इस रूप में देती है, भैया तो यहाँ तक सोच रहे हैं कि जहाँ बाबूजी का मन लगे, वे प्रसन्नचित्त रहें, उन्हें वहीं रखा जाए। उन्होंने पता लगाया है कि नोएडा के सेक्टर पचपन में कोई आनंद निकेतन वृद्धाश्रम है, क्यों न उनके रहने की व्यवस्था वहीं कर दी जाए। हमउम्रों की जमात में बाबूजी का मन लगा रहेगा। भैया जगह देख आए हैं। वे बता रहे हैं कि बहुत सुंदर है। भोजनादि की व्यवस्था उत्तम कोटि की है। उन्हें वहाँ रखने के निर्णय से भैया पर खर्च का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। भैया उसे सहर्ष उठाने के लिए तैयार हैं। नरेंद्र अपने पिता को घर से बाहर रखने में ही सुविधा देखता है, इसी दृष्टि से वह हरिद्वार का आश्रम भी देख आया है। इस संबंध में शालिनी अपने पिता बाबू जसवंत सिंह से कहती है, हरिद्वार के किसी आश्रम के विषय में भी भैया के मित्र राजीव रायजादा ने उनसे चर्चा की है। आश्रम ठीक गंगातट पर है। आश्रम से बाहर न भी निकला जाए तो भी आराम से कमरे की खिड़की से संझा की मनोरम आरती देखी जा सकती है ।

बच्चों द्वारा आत्मकेंद्रित होना :

माँ-बाप के समान बच्चे भी आत्म केंद्रित हो गये हैं। अपने उपेक्षित जीवन में बाबू जसवंत सिंह को अपने

Scanned by CamScanner

पोतों का सुख भी नसीब नहीं है। उनके पोते मलय-निलय के मन में भी दादू के प्रति कोई आदर नहीं। भोगवादी संस्कृति और कम्पयूटर जनित तकनीकी विकास में उलझे हुए बच्चों को किसी की जरूरत महसूस नहीं होती। उन्हें अपने दादाजी की अपेक्षा कम्प्यूटर ही अधिक उपयोगी लगता है। बाबू जसवंत सिंह अपने पोते मलय का जन्म दिन पूरे उत्साह के साथ मनाना चाहते हैं, किंतु पोते मलय ने पहले ही अपने मम्मी-पापा के साथ जन्मदिन 'मैकडोनाल्ड' में मनाने का कार्यक्रम बना लिया है, किंतु बच्चे पार्टी में बड़ों को शामिल नहीं करना चाहते। इस सन्दर्भ में पोता मलय कहता है, न न दादू! अपने साथ हम किसी भी बड़े को नहीं ले जायेंगे-पार्टी बोरिंग हो जाएगी।

निष्कर्ष:

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वरि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्था यशोबलम्।।

(मनुस्मृति -121-अध्याय दो)

अर्थात् जो व्यक्ति अपने से बड़ों को प्रणाम एवं उनका नित्य रूप से अभिवादन करता है, उस व्यक्ति की आयु, विद्या, कीर्ति और शक्ति की वृद्धि होती है। इस सुभाषित की घोषणा करने वाली भारतीय संस्कृति में वृद्धों के लिए विशेष सम्मान दिया गया है। समय के साथ परिस्थितियाँ बदल गईं और आज यह स्थिति हो गई है कि व्यक्ति और समाज दोनों के लिए बुढ़ापा अभिशप्त प्रतीत होने लगा है। बुजुर्गों को कभी पारिवारिक संपत्ति माना जाता था, आज वही बुजुर्ग परिवार में एक बोझ के रूप में देखे जाने लगे हैं। वैज्ञानिक प्रगति के साथ जहाँ मानव की औसत आयु बढती जा रही है, वहीं बुढ़ापे की समस्याएँ भी बढ़ रही हैं ।

आधुनिक होते भारत की बदलती जीवन शैली में परिवार और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले बुजुर्गों की स्थिति काफी दयनीय है। वृद्धों के सन्दर्भ में गांवों की अपेक्षा शहरों की स्थिति बहुत शोचनीय है। कई संपन्न परिवारों के बुजुर्ग तो वृद्धाश्रम की शरण ले रहें है या उन्हें वृद्धाश्रम में धकेल दिया जा रहा है। समाज में जब तक व्यक्ति का योगदान रहा, तब तक वह समाज का अभिन्न अंग बना रहा और जैसे ही बूढ़ा हो गया, वह समाज से कट गया और केवल एक 'वस्तु' बनकर रह गया; ऐसी वस्तु जिसका न कोई मोल है, जो न किसी काम की है और न ही कुछ पैदा कर सकने योग्य। वृद्धावस्था के कारण उन्हें अधिकारों से वंचित किया जाता है और वे विरोध करते हैं पर उनकी बात को अनसुना करके युवा पीढ़ी सत्ता हथिया लेती है। जो माता-पिता अपने बच्चों को बचपन की जरूरतों से लेकर करियर निर्माण और शादी-विवाह की जिम्मेदारी वहन करते हुए अपनी जरूरतों को नजरअंदाज कर देते हैं, यह सोचकर कि बच्चे ही उनके बुढ़ापे का सहारा हैं। परंतु समय के साथ सारा गणित उलटा जाता है। जिन बच्चों को बुढ़ापे की बैसाखी समझते हैं, वहीं संतान उनके बुढ़ापे में उनसे छुटकारा पा लेना चाहती है। वे अपने माता-पिता का बोझ और अपन ऐशो-आराम भरी जिन्दगी की सबसे बड़ी बाधा समझते हैं। ऐसे बच्चों को यह भी अहसास नहीं होता कि वे उन्हीं माँ-बाप की बदौलत इस ऐशो आराम की जिंदगी जीने के काबिल हुए हैं। बच्चों के विवाह के बाद तो माता-पिता की स्थिति और भी चिंताजनक हो जाती है। अपवादों को छोड़ दें तो अधिकतर बहुएँ घर के बुजुर्गों की उपेक्षा और तिरस्कार में कोई कसर नहीं छोड़तीं।

■■

प्राचार्य, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविध्यालय, बसवन बागेवाडी मो. 9448185705

Scanned by CamScanner